॥ श्री ॥

अनुक्रमणिका

नं०	नाम विषय	पृष्ठ
१	सत्तत्त्व मीमांसा	१
२	गणिजी केवलचन्दजीका संक्षिप्त जीवन चारित्र	११८
३	मृत्युके बाद नुकता करने का हानिकारक रिवाज	१४७
४	मृत्यु के पश्चात् रोना पीटना हानिकारक का निषेध	१६६
५	मनोनिग्रह	२०१
६	जैन शब्दका महत्त्व	२२३
७	शिक्षा सुधार	२२९
८	ईश्वर भक्ति	२४९
९	देव गुरु और धर्मका स्वरूप	२९१
१०	श्रीमद् हीरविजय सूरीजी महाराज का जीवन चारित्र	३२१

चित्र परिचय

१ श्रीमद् आचार्य विजयानन्द सूरी–आत्मारामजी महाराज
२ श्रीमान् दानवीर सेठ राय सा० केसरी सिंहजी (कोटा-वाले) रतलाम

३ श्रीमद् जैन धर्म्मोपदेष्टा मुनि लब्धि विजय जी महाराज
४ गणिजी केवलचन्द्रजी महाराज
५ गणिजी बालचन्दजी खामगांव
६ श्रीयुत् सेठ सा० लक्ष्मीचन्दजी धीया प्राविनशियल सेक्रेटरी श्री जैन श्वेताम्बर कानफरन्स–परतापगढ़ निवासी
७ श्रीयुत सेठ सा० रतनलालजाजी सूराना रतलाम निवासी
८ श्रीयुत शेरसिंहजी कोठारी सैलाना निवासी भूत पूर्व उपदेशक श्री जैन श्वेताम्बर कानफरन्स
९ श्रीमद हीरविजय सूरीजी महाराज और बादशाह अकबर